उपभोग फलन अथवा उपभोग प्रवृत्ति
[CONSUMPTION FUNCTION OR PROPENSITY TO CONSUME]

उपभोग व्यय (Consumption Expenditure):

उपभोग व्यय उस निश्चित राशि को कहते हैं जो समाज की सम्पूर्ण आय में से उपभोग पर व्यय की जाती है।

उदाहरण,

यदि कुल राष्ट्रीय आय 5,000 करोड़ रु में से 4,000 करोड़ रु उपभोग पर व्यय किया जाता है तो 4,000 करोड़ रु की राशि उपभोग व्यय को प्रदर्शित करती है।

👍 आय में वृद्धि होने पर उपभोग व्यय भी बढ़ जाता है।

उपभोग प्रवृत्ति

उपभोग व्यय तथा आय के विभिन्न स्तरों पर उपभोग व्यय की विभिन्न मात्राओं के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करती है। आय के परिवर्तन से उपभोग व्यय में परिवर्तन होता है, परन्तु प्रवृत्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है।

उपभोग फलन (CONSUMPTION FUNCTION)

उपभोग फलन अथवा उपभोग प्रवृत्ति, आय-उपभोग के परस्पर सम्बन्ध को व्यक्त करती है।

- यह दर्शाती है कि आय के परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग व्यय किस प्रकार परिवर्तित होता है।

प्रो. कुरिहारा (K. K. Kurihara) के अनुसार, "उपभोग फलन, कुल उपभोग तथा सकल राष्ट्रीय आय, इन दो मात्राओं के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध है।"

$$C = f(Y)$$

जहाँ,

C = उपभोग, Y = आय, f = फलनात्मक सम्बन्ध अर्थात उपभोग (C),

उपभोग फलन की महत्वपूर्ण बातें—

(1) आय में वृद्धि होने के साथ-साथ उपभोग व्यय में भी वृद्धि होती है।
(2) परन्तु आय में होने वाली वृद्धि की तुलना में उपभोग व्यय में कम वृद्धि होती है।

(3) आय में वृद्धि का कुछ भाग उपभोग पर व्यय किया जाता है तथा शेष भाग बचत किया जाता है। **[Y-C=S]**

(3) आय में वृद्धि के साथ उपभोग व्यय में वृद्धि घटती हुई दर में होती है अर्थात जैसे-जैसे आय के स्तर में वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे उपभोग व्यय का आय के अनुपात घटता जाता है अर्थात बचत का आय का अनुपात बढ़ता जाता है।

प्रो. शापिरो ने लिखा है कि, *"उपभोग का निरपेक्ष स्तर आय के स्तर के साथ-साथ परिवर्तित होता है जबकि उपभोग किया गया आय का अंश आय के स्तर के साथ विपरीत दिशा में परिवर्तित होता है।"*

उपभोग प्रवृत्ति

- औसत उपभोग प्रवृत्ति
- सीमांत उपभोग प्रवृत्ति

औसत उपभोग प्रवृत्ति (AVERAGE PROPENSITIES TO CONSUME—APC)

औसत उपभोग प्रवृत्ति, कुल उपभोग व्यय तथा कुल आय के अनुपात को व्यक्त करती है।

कुरिहारा के अनुसार, *औसत उपभोग प्रवृत्ति को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि यह आय के किसी विशेष स्तर पर उपभोग व्यय का अनुपात है।*

$$\text{औसत उपभोग प्रवृत्ति} = \frac{\text{कुल उपभोग व्यय}}{\text{कुल आय}}$$

APC = C/Y

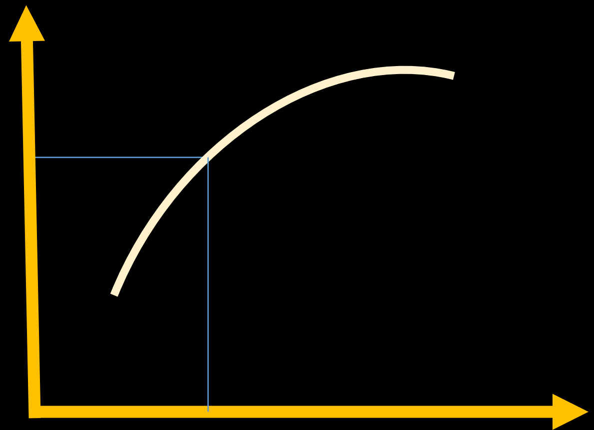

कुल आय = ₹1000

उसमें से उपभोग पर व्यय = ₹900

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) = C / Y

अर्थात

= 900 / 1,000 = 9/10 = 0.9

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति
(MARGINAL PROPENSITIES TO CONSUME—MPC)

जब आय में वृद्धि होती है तो उपभोग की मात्रा में भी वृद्धि होती है। कभी-कभी यह देखा जाता है कि आय की मात्रा में जितनी वृद्धि होती है उपभोग की मात्रा में उतनी ही वृद्धि नहीं होती। उपभोग में वृद्धि का अनुपात आय में वृद्धि से कम होता है। उसे उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume) कहते हैं।

प्रो. कुरिहारा के अनुसार, "सीमांत उपभोग प्रवृत्ति को इस तरह परिभाषित किया जा सकता है कि यह उपभोग में परिवर्तन का आय में परिवर्तन से अनुपात होता है अथवा यह आय में परिवर्तन होने पर औसत उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन की दर है।"

$$MPC = \Delta C / \Delta Y$$

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति की आय 1,000 रुपये और उपभोग पर व्यय 900 रु है। अब यदि उसकी आय बढ़कर 1,100 रु हो जाती है तो उपभोग व्यय बढ़कर 950 रु हो जाता है। mpc=?

$$MPC = \Delta C / \Delta Y$$
$$= 50 / 100 = 1/2 = 0.5$$

अर्थात सीमांत उपभोग प्रवृत्ति 0.5 है।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की विशेषताएं

(1) MPC का मूल्य सदैव धनात्मक तथा एक (Unity) से कम होता है। ($0 < mpc < 1$) अर्थात, *आय में होने वाली प्रत्येक वृद्धि उपभोग पर व्यय की जाती है, किन्तु पूरी नहीं। इसके विपरीत, जब आय घटती है तो उपभोग व्यय उसी अनुपात में नहीं घटता और वह कम घटता है।*

(2) गरीबों की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति धनी व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक होती है। *गरीबों की मौलिक आवश्यकताएं उनकी वर्तमान आय से पूरी नहीं हो पाती हैं, अतः जब उनकी आय में वृद्धि होती है तो वे उस अतिरिक्त आय का बड़ा भाग उपभोग में व्यय करते हैं।*

(3) दीर्घकाल में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति स्थिर हो जाती है, *क्योंकि दीर्घकाल में लोग अपने जीवन स्तर को स्थिर रखते हैं।*

(4) आय में वृद्धि के साथ-साथ mpc घटती जाती है।

(5) यदि mpc का मूल्य आय के प्रत्येक स्तर पर समान है तो पूरी रेखा सीधी रेखा होगी, परन्तु यदि आय के साथ mpc घटती है तो रेखा वक्राकार होगी।

औसत बचत प्रवृत्ति (APS)

औसत बचत प्रवृत्ति समाज की आय तथा बचत के बीच सम्बन्ध व्यक्त करती है। इसे निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है—

औसत बचत प्रवृत्ति = कुल बचत / कुल आय

या,

$$APS = S / Y$$

हम जानते हैं,

$$Y = C + S$$

उपर्युक्त समीकरण में Y से भाग देने पर,

$$Y/Y = C/Y + S/Y$$

या,

$$1 = APC + APS$$

या,

$$APS = 1 - APC$$

उदाहरण,

यदि आय 1,000 रु है, किन्तु उपभोग पर व्यय केवल 900 रु होता है अर्थात 100 रु की बचत होती है। अतः APS इस प्रकार होगी—

$$APS = 100 / 1{,}000 = 1/10 = 0.1$$

उपभोग प्रवृत्ति तथा बचत प्रवृत्ति का सम्बन्ध

(1) यदि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति ($\Delta C/\Delta Y$) में वृद्धि होती है तो सीमांत बचत प्रवृत्ति ($\Delta S/\Delta Y$) में कमी आती है।

(2) यदि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति ($\Delta C/\Delta Y$) में निरन्तर वृद्धि होती है तो औसत उपभोग प्रवृत्ति (C/Y) में वृद्धि होने लगती है और औसत बचत प्रवृत्ति (S/Y) में कमी होने लगती है।

(3) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति का योग तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति और औसत बचत प्रवृत्ति का योग 1 (एक) होता है।

अर्थात

(i)

$$MPC + MPS = 1$$

$$\Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y = 1$$

(ii)

$$APC + APS = 1$$

$$C/Y + S/Y = 1$$

रेखिक उपभोग फलन (Linear Consumption Function)

यदि आय के प्रत्येक स्तर पर MPC स्थिर है अर्थात आय के साथ उपभोग व्यय में होने वाले परिवर्तन की दर स्थिर है तो उपभोग फलन रेखिक होगा और ग्राफिक दृष्टि से उपभोग वक्र एक सीधी रेखा के रूप में होगा।

रेखिक उपभोग फलन की निम्नलिखित समीकरण द्वारा व्यक्त किया जा सकता है—

$$C = C_0 + cY$$

जहाँ

C_0 **स्वतन्त्र उपभोग** अथवा *न्यूनतम उपभोग है जिसका सम्बन्ध आय स्तर से नहीं है।*

आय के शून्य होने पर भी C_0 की मात्रा धनात्मक बनी रहती है।

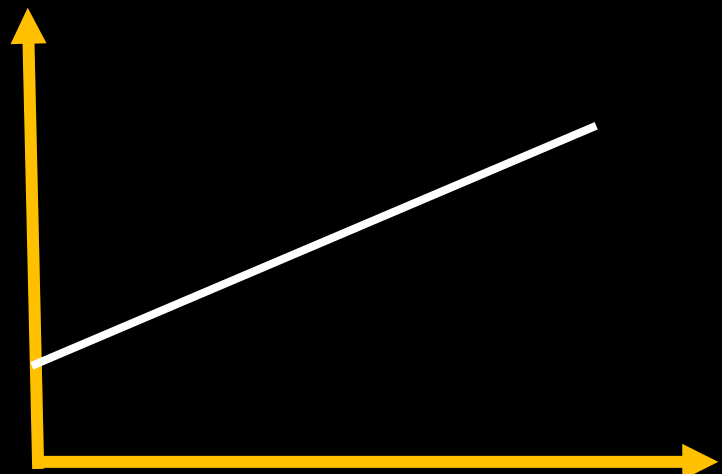

प्रो. कीन्स का उपभोग सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक नियम
(KEYNES' PSYCHOLOGICAL LAW OF CONSUMPTION)

कीन्स ने उपभोग के सम्बन्ध में एक मौलिक नियम की व्याख्या की है, जो कि उनके आय-व्यय सिद्धान्त का आधार है।

उनके अनुसार, *"आधारभूत मनोवैज्ञानिक नियम जिस पर हम मानव स्वभाव के सम्बन्ध में अपने ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर बहुत अधिक विश्वास के साथ निर्भर रह सकते हैं, यह है कि उपभोक्ता जब आय में वृद्धि होती है, तो उपभोग बढ़ता है, किन्तु उतना नहीं जितना कि आय में वृद्धि होती है।"*

इसके मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार हैं—

(1) कुछ आय में वृद्धि होने पर, कुछ उपभोग व्यय में भी वृद्धि होती है किन्तु उपभोग व्यय में वृद्धि, आय में वृद्धि की तुलना में कम होती है।
(2) आय में जो वृद्धि होती है, उसे उपभोग एवं बचत के रूप में एक निश्चित अनुपात में विभाजित किया जाता है।
(3) आय में वृद्धि के फलस्वरूप एक व्यक्ति के उपभोग एवं बचत दोनों में वृद्धि होती है। उपभोग में इसीलिए वृद्धि होती है, क्योंकि आय बढ़ने से एक व्यक्ति पहले की तुलना में अधिक सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है।

$$0 < \Delta C / \Delta Y < 1$$

कीन्स के उपभोग सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक नियम की मान्यताएँ

(i) इस नियम के लागू होने के लिए अर्थव्यवस्था में सामान्य परिस्थितियाँ विद्यमान रहनी चाहिए अर्थात युद्ध, आर्थिक मंदी, क्रान्ति, आदि परिस्थितियाँ नहीं होनी चाहिए।

(ii) यह भी एक मान्यता है कि वर्तमान मनोवैज्ञानिक-संरचनात्मक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए अर्थात उपभोक्ताओं की उपभोग प्रवृत्ति स्थिर बनी रहती है।

(iii) देश में एक सुदृढ़ पूंजीवादी अर्थव्यवस्था होनी चाहिए जिसमें सरकार का उपभोग पर कोई नियन्त्रण न हो।

केन्सीय उपभोग फलन की प्रमुख विशेषताएँ
(IMPORTANT FEATURES OF KEYNES' CONSUMPTION FUNCTION)

1. कीन्स के अनुसार, *आय उपभोग का महत्वपूर्ण निर्धारक है।* आय में वृद्धि से उपभोग बढ़ता है।

2. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) शून्य से अधिक और एक से कम होती है अर्थात *$0 < MPC < 1$ ।*

3. कीन्स के *उपभोग फलन ($C = a + bY$) के अनुसार औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) आय में वृद्धि के साथ घटती है।* कीन्स का विचार था कि धनी व्यक्ति अपनी आय का अपेक्षाकृत अधिक भाग बचत करते हैं जिससे उनके उपभोग का आय से अनुपात घटता है अर्थात औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) आय में वृद्धि के साथ घटती है।

4. यह *अल्पकाल में स्थिर रहता है।*

उपभोग फलन के निर्धारक तत्व
(DETERMINANTS OF CONSUMPTION FUNCTION)

कीन्स के अनुसार उपभोग तीन प्रकार के तत्वों से प्रभावित होता है—

1. आय स्तर (Income Level)
2. वस्तुपरक तत्व (Objective Factors)
3. व्यक्तिपरक तत्व (Subjective Factors)

(1) **आय स्तर**—उपभोग के स्तर को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व आय है। इसीलिए *समाज के निर्धन वर्गों की आय में वृद्धि पर जोर दिया जाता है, क्योंकि आय में वृद्धि से वस्तुओं की मांग बढ़ने की सम्भावना होती है और निर्धन वर्ग अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठा सकता है।*

(2) **वस्तुपरक तत्व**— कीन्स ने पाँच वस्तुपरक तत्वों का विवरण दिया है जो उपभोग को प्रभावित करते हैं। वे तत्व निम्नलिखित हैं—

(i) आकस्मिक लाभ या हानि—कभी-कभी कुछ व्यक्तियों को पर्याप्त रकम आकस्मिक लाभ के रूप में प्राप्त हो जाती है; जैसे कि किसी कम्पनी के शेयर का मूल्य अचानक बढ़ जाता है या उनकी आर्थिक स्थिति में अचानक वृद्धि हो जाती है तो वे पहले से अधिक उपभोग करने में सक्षम हो जाते हैं।

(ii) ब्याज की दर—यदि ब्याज की दर बढ़ जाती है तो लोग अधिक बचत करने लगते हैं। इसके विपरीत यदि ब्याज दर घटती है तो लोग अधिक उपभोग करते हैं।

(iii) राजकोषीय नीति—यदि सरकार कर की दरें बढ़ा देती है तो जनता के पास उपभोग के लिए कम आय बचती है। इसके विपरीत यदि करों में कमी की जाती है तो उपभोग में वृद्धि होती है।

(iv) मजदूरी की दरों में परिवर्तन—मजदूरी दरों में परिवर्तन का भी उपभोग पर प्रभाव पड़ता है। यदि मजदूरी दर बढ़ती है तो उपभोग बढ़ता है और यदि मजदूरी घटती है तो उपभोग घटता है।

(v) प्रत्याशाओं में परिवर्तन—भविष्य के बारे में लोगों की अपेक्षाओं का भी उपभोग पर प्रभाव पड़ता है।

(3) **व्यक्तिपरक तत्व**—वस्तुपरक तत्व समाज की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं, जबकि व्यक्तिपरक तत्व व्यक्ति विशेष के व्यवहार से सम्बन्धित होते हैं।

कीन्स के अनुसार निम्नलिखित आठ तत्व इस श्रेणी में आते हैं—

(i) सावधानी
(ii) दूरदर्शिता
(iii) लाभ
(iv) सुरक्षा
(v) आर्थिक उन्नति
(vi) व्यावसायिक उद्देश्य
(vii) पारिवारिक भावना
(viii) कृपणता

उपभोग फलन का महत्व
(IMPORTANCE OF CONSUMPTION FUNCTION)

(1) विनियोग के महत्व का प्रतिपादन—कीन्स ने उपभोग फलन की अवधारणा के विश्लेषण से यह सिद्ध किया कि बेरोजगारी को दूर करने के लिए निवेश में वृद्धि आवश्यक है।

(2) 'से' के बाजार नियम का खण्डन—कीन्स ने यह सिद्ध किया कि आपूर्ति अपनी मांग स्वयं उत्पन्न नहीं करती।

(3) पूंजी की सीमांत दक्षता में गिरावट—उपभोग में कमी से निवेश की प्रेरणा घटती है जिससे उत्पादन और रोजगार पर प्रभाव पड़ता है।

(4) व्यापार चक्र—प्रभावी मांग में परिवर्तन से व्यापार चक्र उत्पन्न होते हैं।

(5) सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता—अर्थव्यवस्था में संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक है।

(6) अति-बचत एवं अल्प-विनियोग—उपभोग में कमी से अति-बचत तथा अल्प-विनियोग की समस्या उत्पन्न होती है।

(7) अल्प रोजगार सन्तुलन की व्याख्या—कीन्स ने यह स्पष्ट किया कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के स्थान पर अल्प रोजगार सन्तुलन भी सम्भव है।

उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि के उपाय
(MEASURES TO RAISE THE PROPENSITY TO CONSUME)

(1) **आय का पुनर्वितरण**—निर्धनों की आय बढ़ाने से उपभोग प्रवृत्ति बढ़ती है।

(2) **मजदूरी नीति**—मजदूरी में वृद्धि से उपभोग बढ़ता है।

(3) **साख की सुविधाएं**—सस्ती तथा सुलभ साख सुविधाओं से उपभोग बढ़ता है।

(4) **सामाजिक सुरक्षा**—सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से उपभोग प्रवृत्ति बढ़ती है।

(5) **विज्ञापन एवं प्रचार**—विज्ञापन उपभोग को बढ़ावा देते हैं।

(6) **नगरीकरण**—नगरीकरण से लोगों की उपभोग प्रवृत्ति बढ़ती है।

कीन्स के उपभोग प्रवृत्ति विचार की आलोचना

(1) यह सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है।

(2) उपभोग का निर्धारण केवल आय से नहीं होता।

(3) यह सिद्धान्त अल्पकालीन है।

(4) उपभोग के अन्य कारकों की उपेक्षा की गई है।

(5) यह सिद्धान्त सभी परिस्थितियों में लागू नहीं होता।